शिशुपालवध में सम्प्राप्त पुष्प वर्ग की वनस्पतियों का आयुर्वेदीय अध्ययन

जयप्रकाश पाल शोधच्छात्र B.H.U. एवं प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (T.G.T.) के. वि. हासपेट, कर्नाटक

प्रो0 डॉ0 ए0 सी0 कर विकृति विज्ञान विभाग, आयुर्वेद संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

संक्षेप : शिशुपालवध में महाकवि माघ ने पुष्प वर्ग के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के पुष्पों का वर्णन किया है। पौधों में एक निश्चित समयाविध के पश्चात् पुष्प का उत्पन्न होना सुनिश्चित होता है। पुष्पों का आकार, रंग, आकृति एवं विभिन्न अंगो का विकास भिन्न-भिन्न पौधो में भिन्न-भिन्न प्रकार से होता है। पुष्पों का जीवन बहुत कम समय के लिए होता है। पुष्प आकर्षक, सुगन्धित तथा मनमोहक होते है। अधिकांश पुष्प सजावट, पूजा-अर्चना करने तथा औषधीय कार्य में उपयोग किये जाते है।

कूट शब्द : कदम्ब, कमल, कुटज, मन्दार, मालती, अशोक असन, चम्पा, लोध्र, जूही, कुसुम्भ, तमाल, सप्तछद, नीली झिण्टी, पलाश तथा जपा आदि। पुष्प वर्ग के अन्तर्गत आने वाली प्रमुख पुष्पों का आयुर्वेदीय वर्णन निम्न प्रकार है।

कदम्ब : दम्ब पुष्प अत्यधिक सुगन्धित होने के कारण बहुत ही शोभनीय लगता है। रैवतक पर्वत पर पक्षियों के समूह की सदा उपलब्धता रहता है। तथा कदम्ब वनों को कम्पित करती **वायु मेघों को कपाती हुई विचरण करती**[1]रहती है एवं नवीन विकसित कदम्ब के मकरन्द से नभ का रक्त वर्ण का होना जिससे रमणियों के मन में प्रेम भावना उत्पन्न हो जाना स्वाभाविक हो जाता है।

नवकदम्ब... नवनवा वनवायु भिरादधे[2]।

कदम्ब पुष्प की शोभा बहुत देर तक बनी रहती है। ऐसे कदम्ब की भाँति राजा युधिष्ठिर का शरीर बहुत देर तक रोमांच युक्त दिखलाई पड़ रहा था।

कुरूभर्तुरंगलतया न तत्यजे विकसत्कदम्बनिकुरम्बचारुता[3]।

आयुर्वेदीय दृष्टिकोण से आचार्य चरक ने **कदम्ब को तीव्र वेदना[4] कम करने** वाला बतलाया है। अष्टांगहृदय में **कदम्ब को व्रण के उत्तम, संग्राही, भग्न को जोड़ने वाला, भेद पित्त, रक्तस्राव, प्यास, दाह और योनि रोग नाशक[5]** माना गया है।

कमल : अथर्ववेद में वर्णन है कि जिस देश में जाने या अनजाने में ब्राह्मणी का अपहरण होता है, वहाँ कमल वाले तालाब नहीं होते और कमलों में बीज तथा बीज वाले मृणाल नहीं होते।

नास्य क्षेत्रे पुष्करिणी नाण्डीकं जायते बिसम्[6] ।

शिशुपालवध में विभिन्न प्रकार के कमल वनों का उल्लेख हुआ है। **नील कमल[7] लाल कमल[8] भूरा कमल[9] तथा सफेद कमल[10]** चरक सूत्र में कुमुद (श्वेत् कमल) उत्पल (नीला कमल) फूल और फल सहित शीतल, मधुर, कषाय, रस, कफ-वायु प्रकोपक है।

कुमुदोत्पलनालास्तु सपुष्पा सफलाः स्मृताः[11]।

शीताः स्वादु कषायास्तु कफमारुतकोपनाः।।

विशेष गुण : सफेद कमल शीतल, मधुर, कफ और पित्तनाशक है। लाल और नीला कमल इससे कुछ कम गुण वाले होते है।

कुटज : महाकवि कालिदास द्वारा पूर्वमेघ में यक्ष द्वारा कुटज पुष्पों द्वारा पूजा अर्चना करने तथा प्रणयभरे वचनों से पूर्ण स्वागत वचन कहने का वर्णन है।

.....स प्रत्यग्रे कुटज कुसुमै कल्पिताघार्य तस्मै,

प्रीतः प्रीतिप्रमुख वचनं स्वागतं व्याजहार[12]।।

शिशुपालवध में कुटज पुष्प के पराग कणों द्वारा दही के छोटे-छोटे छिटों की समानता का वर्णन हुआ है।

कुटज पुष्प परागकणाः स्फुटं विदधिरे दधिरेणु विडम्बनाम्[13]।

सुश्रुत संहिता में कुटज के पुष्प को कफपित्तहर और कुण्ठघ्न बतलाया गया है।

कफपित्तहरं पुष्पं कुष्ठघ्न कुटजस्य च[14]।

अष्टांगहृदय में कुटज को वत्सकादि **वायु विकार कफ विकार, मेदोदोष, पीनस, गुल्म, ज्वर शूल एवं अर्श रोग[15]**को नष्ट करने वाला माना गया है।

मन्दार : शिशुपालवध में देवांगनाओं द्वारा केशों का श्रृंगार छोड़ दिया जाना तथा मन्दार की मालाएँ भी चोटियों में गूथना भूलवश स्पष्ट करता है कि तत्कालीन समाज में शिर पर मन्दार की मालाएँ धारण करना उत्तम माना जाता था।

गुम्फिताः शिरसि वेणयोऽभवन्नप्रफुल्लसुरपादपस्रजः[16]।

मालती : माघ वर्णन करते हैं कि मालती पुष्पों के संसर्ग मात्र से ही गतिशील नक्षत्रों के समान भ्रमरों ने श्वेत पराग पुंजों की धवलिमा को ही धारण कर लिया।

नवपयः कणकोमल मालती कुसुमसंततिसंततसङ्गिभिः।

प्रचलितोडुनिभै परिपाण्डिमा शुभरजोभरजोऽलिभिराददे[17]।।

सुश्रुत संहिता में मालती के पुष्प को तिक्त एवं सुगन्धित होने के कारण पित्तहर बताया गया है।

मालती.....तिक्ते सौरभ्यात् पित्तनाशने[18]।

भावप्रकाशकार ने मालती को कड़वी, गरम, कसैली, हल्की, दोषों को जितने वाली तथा मस्तक रोग, नेत्ररोग, मुखरोग, विष, दाँद दर्द, कोढ़, वात तथा रक्त विकारों को नष्ट करने वाला बतलाया है।

जातीयुगं तिक्तमुष्णं तुवरं लघु दोषजित्।

शिरोऽक्षिमुखदन्तार्तिविषकुष्ठ व्रणास्रजित[19]।।

अशोक : अशोक पुष्प का वर्णन शिशुपालवध में मांसखण्ड के समान हुआ है, जो कि **विरहिणीयों के हृदय को कामाग्नि के समान कम्पित कर रहा है[20]।** आयुर्वेदीय दृष्टिकोण से अशोक योनिदोषहर, स्तम्भक, वर्ण के लिए हितकर तथा विनाशक है।

.....योनिदोषहर स्तम्भी वर्ष्यो विषविनाशनः[21]।

अशोक का उपयोग रक्तप्रद, कष्टार्तव, श्वेतप्रदर रक्तार्श, रक्तातिसार एवं गर्भाशय के विकारों में उपयोग किया जाता है, **स्त्री रक्तप्रदर[22]**में इसका उपयोग किया जाता है।

असन (विजयसार) : जो माननियों का मान मर्दन करे, उसका नाम असन है। असन पुष्प का दल पीत वर्ग का होता है। तथा पराग रक्तवर्ण के दिखलाई पड़ते है।

कनकभङ्गपिशङ्गदलैर्दधे सरजसारूण केशरचारूभिः।

प्रियविमानितमान वतीरूषां निरसनैरसनैरवृथार्थता[23]।।

आचार्य चरक ने असन् (पीतसाल) आदि औषधियों को **उदर्द अर्थात् शीतपित्त रोग को शान्त[24]**करने वाला बतलाया है। अष्टांगहृदय में असन के गुणों का उल्लेख हुआ है।

असनादिर्विजयते श्वित्रकुष्ठकफक्रिमीन्।

पाण्डुरोगं प्रमेहं च भेदोदोषनिबर्हणः[25]।।

असन श्वित्र, कुष्ठ, कफ, कृमि, पाण्डुरोग, तथा प्रमेह को नष्ट करता है और मेदोदोष को शान्त करता है।

चम्पा : चम्पा के पुष्प को शिशुपालवध में **पीतवर्ण एवं गगन को चुमने वाला**[26] बतलाया गया है तथा **चम्पा पुष्प को स्वर्ण की कान्ति**[27]से युक्त होने का प्रसंग है। आयुर्वेदीय मतानुसार चम्पा कटु, तिक्त-कषाय, मधुर रस युक्त, शीतल एवं विष, क्रिमि, मूत्रकृच्छ, कफ, वात, रक्तविकार या वातरक्त और पित्त को दूर करता है।

चम्पक : कटुकस्तिक्तः कषायो मधुरो हिमः।

विषक्रिमिहरः कृच्छकफ वातास्त्रपित्तजित्[28]**।।**

लोध्र : लम्बे नील कमल के समान कर्णाभरण से आभूषित तथा लोध्र पुष्प के पराग से गोरे रंग की स्त्रियों की कपोस्थली के समान स्थित रैवतक पर्वत को कृष्ण द्वारा देखने का रमणीय प्रसंग है।

विलम्बिनीलोत्पल कर्णपूराः कपोलभित्तीरिव लोध्रगौरीः[29]**।**

चरक संहिता में लोघ्र को शोणित स्थापन अर्थात् **रक्तरोधक बहते खून को रोकने**[30] में वाला माना गया है।

जूही : शिशुपालवध में सुन्दरियों द्वारा धारण किये हुए आभूषण जल क्रिड़ा में प्रफुल्लित पीत पुष्प वाली जुही तथा वाड़वाग्नि की ज्वाला खण्डो की तरह सुन्दर प्रतीत हो रही थी।

हिरण्मयैर्वधूनामौर्वाग्निद्युतिशकलौरिव व्यराजि[31]**।**

कुसुम्भ : कुसुम्भ पुष्पों से तत्कालीन समाज में कपड़ा आदि रगने का कार्य किया जाता था। सम्भवतः यमराज की सुन्दरियों के दुपट्टे को रगने के लिए पानी में कुसुम्भ का रंग घोलकर रखने का रमणीय वर्णन है।

रागार्थ तत्कि नु कौसुम्भमम्भः संव्यानानामन्कान्तः पुरस्य[32]**।**

आचार्य चरक ने कुसुम्भ की भाँजी रूक्ष, अम्ल, उष्ण, कफनाशक तथा पित्तवर्धक होता है।

रूक्षोम्लमुष्णं कौसुम्भं कफघ्नं पित्तवर्धनम्[33]**।**

अष्टांग हृदय में कुसुम्भ को रूक्ष, उष्ण, अम्ल, गुरू पित्तकारक और विरेचक है।

रूक्षोष्णमम्लं कौसुम्भं गुरु पित्तकरं सरम्[34]**।**

तमाल : शिशुपालवध में श्री **कृष्ण को श्यामलवर्ण**[35]का बतलाया गया है तथा रैवतक पर्वत के निकट फैले हुए तमाल वृक्षों के वन परिलक्षित होने का वर्णन है।

यदेतदस्यानुतटं विभाति वनं ततानेक तमाल[36]**.....।**

तमाल के औषधीय गुणों में साखू की भाँति समझना चाहिए किन्तु विशेषतः यह दाह तथा विस्फोट का नाशक होता है।

तमालः शलवद्वद्यो दाहविस्फोटहृत् पुनः[37]**।**

सप्तच्छद : माघ ने शिशुपालवध में नारद जी के शरीर का रंग **सप्तछद पुष्प के समान पीतवर्ण**[38]का बतलाया है। आचार्य सुश्रुत ने सतौना को कषाय, तिक्त, मधुर, रस, कफ पित्त रोगों को नष्ट करने वाला, कुष्ठ, कृमि का नाश करने वाला एवं **दूषित व्रण का शोध**[39] करता है। ऐसा उल्लिखित किया है। आचार्य चरक ने सप्तपर्ण को कुष्ठघ्न अर्थात **कोढ़ का नाशक**[40] तथा **शितपित्तरोग**[41] के शान्त करने वाला बतलाया है।

नीली झिण्टी : नीली झिण्टी की दलों का पंक्तियों में खिलने का रमणीय वर्णन हुआ है। ग्रामीण स्त्रियों द्वारा फूली हुई झिण्टी के समान विशाल नेत्रों द्वारा कृष्ण को छिप-छिपकर **काँटो के घेरों के ऊपर से देखने**[42]का रमणीय वर्णन है। अष्टांगहृदय में नीली झिण्टी को वमन, कुष्ठ, विष ज्वर, कफ, कण्डू प्रमेह को नष्ट करने वाला **त्वचा दूषित व्रर्णो का शोधक**[43] के रूप में उल्लेख हुआ है।

पलाश (ढाक) : श्री कृष्ण द्वारा सर्वप्रथम वसन्त ऋतु में निकले हुए पलाश का दर्शन किया गया जिसके नये-नये पत्ते निकले हुए तथा मनोहर लग रहे थे।

नवपलाशपलाशवनं ..... सुरभि सुमनोभरैः[44]।

पलाश के पुष्प स्वादिष्ट, पाक में चरपरे, कड़वे कसैले, वातकारक, ग्राही, शीतल और कफपित्त, कड़वे कसैले, पातकारक, ग्राही, शीतल और कफपित्त, रूधिर, विकार मूत्रकच्छ, तृषा, दाह, वात, रक्त तथा कुष्ठ को नष्ट करता है।

तत्पुष्पं स्वादु पाके तु कटुतिक्तं कषायकम। .....वातरक्त कुष्ठहरं परम्[45]।।

जपा : कवि माघ जपा पुष्पों के द्वारा प्रत्येक वन की शोभा का वर्णन किया है। **जपा का पुष्प लाल रंग[46]**का होता है।

उपसंहार : पुष्प हमारे जीवन का आधार है। पुष्पों का खिलना जहाँ मन को रोमाचिंत करता है वही पूजा-अर्चना में उनका उपयोग करने से आत्मा की शुद्धि तथा सजावट के कार्यों को करने से मन प्रफुल्लित होता है। तो दूसरी तरफ औषधीय कार्यों में उपयोग करने मात्र से प्राण की रक्षा होती है। जो जीवन को सुचारू रूप से संचालन में सहायक है। तने या शाखाओं पर पुष्प एक निश्चित क्रम में उत्पन्न होते है और एक संगठित पुष्प रचना का निर्माण करते है। इसे **पुष्पविन्यास** अथवा **पुष्पक्रम** कहते है। जो **आयुर्वेदीय तथा सामाजिक** दोनों दृष्टि से उपयोगी रहा है, तथा आगे भी रहेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. शिशुपालवध महाकाव्य- 4/36
2. शिशुपालवध महाकाव्य- 6/32
3. शिशुपालवध महाकाव्य- 13/13
4. चरक संहिता, सूत्रस्थान- 4/47
5. अष्टांग हृदय, सूत्रस्थान- 15/17-18
6. अथर्ववेद- 5/17/16
7. शिशुपालवध महाकाव्य- 4/8, 5/45, 20/48
8. शिशुपालवध महाकाव्य- 11/40, 11/62
9. शिशुपालवध महाकाव्य- 1/5
10. शिशुपालवध महाकाव्य- 1/8
11. चरक संहिता, सूत्रस्थान- 27/117
12. मेघदूतम्, पूर्वमेद्य- 4
13. शिशुपालवध महाकाव्य- 6/35
14. सुश्रुत संहिता, सूत्रस्थान- 46/286
15. अष्टांग हृदय, सूत्रस्थान, शोधनादिगणसंग्रहस्थान- 15
16. शिशुपालवध महाकाव्य- 14/30
17. शिशुपालवध महाकाव्य- 6/36
18. सुश्रुत संहिता, सूत्रस्थान- 46/286
19. भावप्रकाश निघण्टु पुष्पादिवर्ग- 24
20. शिशुपालवध महाकाव्य- 6/5
21. सुश्रुत सहिता, सूत्रस्थान- 38/14-15
22. भाव प्रकाश निघण्टु - पुष्पवर्ग- 23 कृष्ण चन्द्र चनेनकर पृ0 सं0- 488
23. शिशुपालवध महाकाव्य- 6/47, 8/28
24. चरक संहिता, सूत्रस्थान- 4/43
25. अष्टांगहृदय, सूत्रस्थान- 15/19-20
26. शिशुपालवध महाकाव्य- 4/31
27. शिशुपालवध महाकाव्य- 6/5
28. भावप्रकाश निघण्टु पुष्प वर्ग- 32
29. शिशुपालवध महाकाव्य- 4/8
30. चरक संहिता सूत्रस्थान- 4/46
31. शिशुपालवध महाकाव्य- 8/49
32. शिशुपालवध महाकाव्य- 18/69
33. चरक संहिता सूत्रस्थान- 27/109
34. अष्टांग हृदय, सूत्रस्थान, अन्नस्वरूप विज्ञान- 6/101
35. शिशुपालवध महाकाव्य- 1/22, 12/70
36. शिशुपालवध महाकाव्य- 4/39
37. भावप्रकाश निघण्टु वटादिवर्ग- 44

38. शिशुपालवध महाकाव्य- 1/22
39. सुश्रुत संहिता सूत्रस्थान- 38/64-65
40. चरक संहिता, सूत्रस्थान- 4/13
41. चरक संहिता, सूत्रस्थान- 4/43
42. शिशुपालवध महाकाव्य- 12/37
43. अष्टांगहृदय, सूत्रस्थान शोधनादिगण संग्रह- 15/17-18
44. शिशुपालवध महाकाव्य- 6/2
45. भावप्रकाशनिघण्टु- वटादिवर्ग- 51-52
46. शिशुपालवध महाकाव्य- 6/46